पाठ्यचर्या एवं शिक्षा शास्त्र विभाग

प्रस्तुतकर्त्री:

डॉ. सुनीता यादव (विषय विशेषज्ञ)

एक भारत श्रेष्ठ भारत

पंडित लखमी चंद

लोक गायक व हरियाणवी साहित्यकार

जीवन परिचय

पंडित लखमी चंद (जन्म: 1903, मृत्यु: 1945) हरियाणवी भाषा के एक प्रसिद्ध कवि व लोक कलाकार थे। हरियाणवी रागनी व सांग में उनके उल्लेखनीय योगदान के कारण उन्हें "सूर्य-कवि" कहा जाता है। उन्हें "हरियाणा का कालिदास" भी कहा जाता है। 'साँग' कला हरियाणा की लोकसंस्कृति का अभिन्न अंग है। इस कला को अनेक महान शख्सियतों ने अपने ज्ञान कौशल, हुनर और परिश्रम से सींचकर अत्यन्त समृद्ध एवं गौरवशाली बनाया। ऐसी महान शख्सियतों में से एक थे सूर्यकवि पंडित लखमी चन्द। उनका जन्म हरियाणा के सोनीपत जिले के गाँव जांटीकलां में पंडित उदमी राम के घर 15 जुलाई, 1903 को हुआ।

पंडित लखमीचन्द ने अपने जीवन में लगभग दो दर्जन ‘साँगों’ की रचना की, जिनमें ‘नल-दमयन्ती’, ‘हरीशचन्द्र’, ‘ताराचन्द’, ‘चापसिंह’, ‘नौटंकी’, ‘सत्यवान-सावित्री’, ‘चीरपर्व’, ‘पूर्ण भगत’, ‘मेनका-शकुन्तला’, ‘मीरा बाई’, ‘शाही लकड़हारा’, ‘कीचक पर्व’, ‘पदमावत’, ‘गोपीचन्द’, ‘हीरामल जमाल’, ‘चन्द्र किरण’ ‘बीजा सौरठ’, ‘हीर-रांझा’, ‘ज्यानी चोर’, ‘सुलतान-निहालदे’, ‘राजाभोज-शरणदे’, ‘भूप पुरंजन’ आदि शामिल हैं। इनके अलावा उन्होंने दर्जनों अगाध भक्तिपूर्ण भजनों की भी रचना कीं।

भाषा-शैली

पंडित लखमीचन्द की रचनाओं का शब्द विन्यास, तुकबन्दी, छन्द, मुहावरे, रस, समास, अलंकार आदि का प्रयोग बेहद अनूठा एवं अनुपम रहा। कुछ बानगियाँ देखिए:

'तेरे रूप की चमक इसी जाणूं, तेज तेज जंग की का' (नौटंकी)

'घटा हटा झट पट घूंघट, कर मत घोर अंधेरे' (कीचक पर्व)

'सीप में मोती पत्थर में हीरा तू हीरे बीच कणी सै' (पदमावत)

'रूप के निशाने दोनूं जाणूं गोली चालै रण में' (नल-दमयन्ती)

'बदन पै था गहणा एक धड़ी, रूप जाणूं, खिलरी फूलझड़ी, लवै भिड़ी ना दूर खड़ी वा दूर तै हूर घूर कै खागी।' (पदमावत)

पंडित लखमीचन्द ने अपनी रचनाओं में धर्मशास्त्रों के अमूल्य ज्ञान को अपनी रचनाओं में बड़े सहज, सरस व सरल रूप में बखूबी पिरोया है। कुछ बानगियाँ देखिए:

-'बीते बिना टलै नहीं समय और कर्म के भोग।'
- 'राम बराबर समझणा चाहिए जो औरां के दु:ख बांटै।'
- 'पाप नष्ट हों उन बन्द्यां के जो गंगा में नहाया करैं।'
- 'लखमीचन्द भगवान समझ रख ध्यान गुरू चरनन में।'
- 'लोभ नीच दुनिया में नाड़ चाहे जिसकी तोड़ दे।'
- 'वै घर जांगे उत नपूत जड़ै दूध ना दही।'
- 'आए गए अतिथि की खातिर दु:ख सुख सहणा चाहिए।'
- 'क्यों ना पेड़ धर्म का सींचै।'

पंडित लखमी चन्द की अनूठी रचनाओं का अथाह भण्डार है। पंडित लखमी चन्द की रचनाओं पर अनेक विद्वानों ने बड़े-बड़े शोध किए हैं। लेकिन, फिर भी अधूरे लगते हैं। उनकी रचनाएं पूरे देश व समाज को एक नई राह दिखाने वालीं और भारतीय संस्कृति व संस्कारों का संवर्धन करने वाली हैं। उनकी हर रचना अनुकरणीय एवं वन्दनीय है।

समद ऋषि जी ज्ञानी हो-गे जिसनै वेद विचारा / लखमीचंद

समद ऋषि जी ज्ञानी हो-गे जिसनै वेद विचारा।
वेदव्यास जी कळूकाल का हाल लिखण लागे सारा॥ टेक॥
एक बाप के नौ-नौ बेटे, ना पेट भरण पावैगा -
बीर-मरद हों न्यारे-न्यारे, इसा बखत आवैगा।
घर-घर में होंगे पंचायती, कौन किसनै समझावैगा -
मनुष्य-मात्र का धर्म छोड़-कै, धन जोड़ा चाहवैगा।
कड़ कै न्यौळी बांध मरैंगे, मांग्या मिलै ना उधारा॥1॥
वेदव्यास जी कळूकाल का हाल लिखण लागे सारा।
लोभ के कारण बल घट ज्यांगे, पाप की जीत रहैगी -
भाई-भाण का चलै मुकदमा, बिगड़ी नीत रहैगी।
कोए मिलै ना यार जगत मैं, ना सच्ची प्रीत रहैगी -
भाई नै भाई मारैगा, ना कुल की रीत रहैगी।
बीर नौकरी करया करैंगी, फिर भी नहीं गुजारा॥2॥
वेदव्यास जी कळूकाल का हाल लिखण लागे सारा।
सारे कै प्रकाश कळू का, ना कच्चा घर पावैगा -
वेद शास्त्र उपनिषदा नै ना जाणनियां पावैगा।
गऊ लोप हो ज्यांगी दुनियां में, ना पाळनियां पावैगा -
मदिरा-मास नशे का सेवन, इसा बखत आवैगा।
संध्या-तर्पण हवन छूट ज्यां, और वस्तु जांगी बाराह॥3॥
वेदव्यास जी कळूकाल का हाल लिखण लागे सारा।
कहै लखमीचंद छत्रापण जा-गा, नीच का राज रहैगा -
हीजड़े मिनिस्टर बण्या करैंगे, बीर कै ताज रहैगा।
दखलंदाजी और रिश्वतखोरी सब बे-अंदाज रहैगा -
भाई नै तै भाई मारैगा, ना न्याय-इलाज रहैगा।
बीर उघाड़ै सिर हांडैंगी, जिन-पै दल खप-गे थे अठाराह॥4॥
वेदव्यास जी कळूकाल का हाल लिखण लागे सारा।

लाख चौरासी जीया जून मैं नाचै दुनिया सारी / लखमीचंद

लाख चौरासी जीया जून मैं नाचै दुनिया सारी
नाचण मैं के दोष बती या अकल की हुशियारी
सब तै पहलम विष्णु नाच्या पृथ्वी ऊपर आकै
फिर दूजे भस्मासुर नाच्या सारा नाच नचा कै
गौरां आगै शिवजी नाच्या ल्या पार्वती नै ब्याह कै
जल के ऊपर ब्रह्मा नाच्या कमल फूल के म्हा कै
ब्रह्मा जी नै नाच-नाच कै रची सृष्टि सारी
गोपनियां मैं कृष्ण नाच्या करकै भेष जनाना
विराट देश मैं अर्जुन नाच्या करया नाचना गाणा
इन्द्रपरी मैं इन्द्र नाचै जब हो मींह बरसाणा
गढ़ मांण्डव मैं मलके नाच्या करया नटां का बाणा
मलके नै भी नाच-नाच कै ब्याहल्यी राजदुलारी
पवन चलै जब दरख्त नाचैं पेड़ पात हालैं सैं
लोरी दे-दे माता नाचैं बच्चे नै पाळैं सैं
रण के म्हां तलवार नाचती किसे हाथ चालैं सैं
सिर के ऊपर काळ नाचता नहीं घाट घालैं सै
काल बली नै नाच खा लिए ऋषि-मुनि-ब्रह्मचारी
बण मैं केहरी शेर नाचता और नाचै सै हाथी
रीछ और बंदर दोनों नाचैं खोल दिखावैं छाती
गितवाड़े मैं मोर नाचता कैसी फांख फर्राती
ब्याह शादी मैं घोड़ी नाचैं जिस पै सजैं बराती
दूर दराज कबूतर नाचैं लगैं घुटरगूं प्यारी
दीपचन्द खाण्डै मैं नाच्या सदाव्रत खुलवाग्या
बाजे नाई नाच-नाच कै और भी भक्त कुहाग्या
हावळी मैं नत्थू ब्राह्ममण मन्दिर नया चिणाग्या
'लखमीचन्द' भी नाच-नाच कै नाम जगत मैं पाग्या
इसे-इसे भी नाच लिए तै कौण हकीकत म्हारी

एक भारत श्रेष्ठ भारत

धन्यवाद